पर्यावरणीय संस्थाये–

भारत की अनेक संस्थायें पर्यावरण संरक्षण के कार्य में लगी है। यह संस्थाये गैर सरकारी तथा सरकारी, दोनो ही प्रकार की है। इन संस्थाओ का कार्य पर्यावरण एवं प्राकृतिक संसाधनो के संरक्षण के प्रति रूचि जगाना तथा जागरूकता बढाना है। प्राचीन भारत में प्रकृति के प्रति आदर तथा संरक्षण के संस्कार प्रचुर रूप से जनजीवन में समाये हुए थे परन्तु समय के साथ यह संस्कार क्षीण, लुप्त और दिशाहीन हो गये है। इस दशा में जन–जागरण ही एकमात्र उपाय है। यद्यपि पर्यावरण संरक्षण के प्रति सचेष्ट संस्थाओ की संख्या बहुत बड़ी है परन्तु यहां पर केवल उन्ही का उल्लेख किया जा रहा है जो प्रसिद्ध एवं प्रमुख है। इन्हे गैर सरकारी तथा सरकारी वर्गो में विभाजित किया जा सकता है–

अ. गैर सरकारी संगठन(Non government organization)

1. बॉम्बे प्राकृतिक इतिहास समाज (Bombay Natural History Society),मुम्बई

इस संस्था को संक्षेप में बी0एन0एच0एस0 (BNHS) कहा जाता है। इसका आरम्भ सन् 1883 में कुल छः सदस्यो की समिति के रूप हुआ था। इसके आरम्भिक सदस्य शिकारी थे। कमशः यह एक शोध संगठन के रूप में विकसित हुआ तथा इसनें देश की प्रकृति संरक्षक नीतियों पर भी व्यापक प्रभाव डाला। इस बहुआयामी संगठन का वन्यजीवन निति निर्धारण, शोध, जनप्रिय प्रकाशन तथा नागरिको द्वारा किये गये कार्य एक विशिष्ट योगदान है। इसका प्रधान योगदान वन्यजीवन पर किया गया शोध कार्य है। यह भारत की शोध परक संरक्षक संस्थाओ में सबसे पुरानी है तथा जीव प्रजातियों एवं विभिन्न पारिस्थितिक तन्त्रो की रक्षा के संघर्ष में अग्रणी रही है। बा0ने0हि0सो0 की प्रमुख तथा निश्चित अन्तरालों पर प्रकाशित होने वाली दो पत्रिकाऐ है–हार्नबिल (Hornbill) नामक पत्रिका तथा नेचुरल हिस्ट्री (Natural History) नामक शोध पत्रिका। सालिम अली की हैण्डबुक आफ बर्ड्स (Handbook of Birds), जे0सी0 डैनियल की भारतीय सरिसृप (Denials Indian Reptiles) तथा एस0एच0पीटर की पुस्तक भारतीय स्तनी (Indian Mammals) इस संस्था द्वारा जन्तुओ पर प्रकाशित अंग्रेजी भाषा की पुस्तके है एवं पी0वी0बोल्के की भारत के वृक्ष वनस्पतियो पर प्रकाशित अंग्रेजी पुस्तक है। उपरोक्त लेखको में डा0 सालिम अली, भारतीय उपमहाद्वीप के पक्षियो के अध्ययन हेतु विश्वविख्यात महान प्रकृति विज्ञानी थे। इस संस्था ने भारत–सरकार को विभिन्न पर्यावरणीय विधि (Laws) बनाने में तो सहायता की ही है साथ ही संरक्षण सम्बन्धी आन्दोलनो, जैसे कि सेव साइलेन्ट वैली (Save Silent Vally) में भी भाग लिया है।

2. प्रकृति के लिए विश्वव्यापी निधि (Word wide fund for Nature) नई दिल्ली

आरम्भिक रूप से WWF-I सन् 1969 में मुम्बई में स्थापित हुआ परन्तु कालान्तर में इसका मुख्यालय दिल्ली में स्थानांतरित कर दिया गया। इसकी शाखायें लगभग सारे भारत में है। शुरूआत में इसकी गतिविधियों वन्य जीवन संम्बधी शिक्षण पर केन्द्रित रही परन्तु बाद में यह संगठन स्कूलो में नेचर क्लब्स आफ इन्डिया नाम के समूहो को बनाने तथा साथ ही प्रकृति एवं विकास के मुद्दो पर एक विचारक की भूमिका में आ गया।

3. विज्ञान तथा पर्यावरण केन्द्र Centre for science and Environment (CSE) नई दिल्ली–

जन गतिविधियो का संयोजन, कार्यशालाओ एवं संम्मेलनो का आयोजन तथा पर्यावरण सम्बन्धी साहित्य का प्रकाशन इस संस्था के प्रमुख कार्य है। यह भारत के पर्यावरण की स्थिति पर एक वृहत पत्र (major document) प्रकाशित करता है। यह एक प्रकार से पर्यावरण पर नागरिको की आख्या है जो स्वयं में इस प्रकार का प्रथम प्रयास है। इसका एक अन्य प्रकाशन– डाउन टु अर्थ (Down to Earth) नामक सामान्य–रूचि–विज्ञान एवं पर्यावरण पत्रिका है जो प्रत्येक 15 दिन पर प्रकाशित होती है। यह जैवविविधता सम्बन्धी सामग्री,पुस्तकों, पोस्टर, विडियो आदि का उत्पादन करने के साथ कार्यशाला तथा गोष्ठियो आदि का भी आयोजन करता है।

4. सी0पी0आर0पर्यावरण शिक्षा केन्द्र– CPR Environmental Education Centre(CPREEC) , मद्रास (चेन्नई)

इसकी स्थापना सन् 1988 में भारत सरकार तथा सी0 पी0 रामास्वामी प्रतिष्ठान के संयुक्त प्रयास से हुयी थी। यह अनेक प्रकार के कार्यकमो का संचालन करता है जिसमें पर्यावरण के प्रति जागरूकता तथा जन सामान्य में पर्यावरण संरक्षण के प्रति रूचि उत्पन्न करना है। प्राथमिक रूप से इसकी गतिविधियॉ सरकारी संगठनो, शिक्षको, महिलाओं, किशोरो तथा बच्चो को प्रकृति एवं प्राकृतिक संसाधनो के संरक्षण के लिए प्रोत्साहित करने पर केन्द्रित रहा है। इसके कार्यकमो में वन्यजीवन तथा जीव विविधता से जुड़े सरोकार समाहित है। यह केन्द्र बड़ी संख्या में अनेक शीर्षकों का प्रकाशन भी करता है।

5. पर्यावरण शिक्षा केन्द्र– Centre for Environmental Education (CEE) , अहमदाबाद

पर्यावरण शिक्षा केन्द्र की स्थापना सन् 1989 में हुयी थीं यह अनेक प्रकार के कार्यकमो का संचालन करता है साथ ही पर्यावरण शिक्षा पर विविध अध्ययन सामग्री का भी उत्पादन करता है इस केन्द्र ने अपने प्रशिक्षण कार्यकमो द्वारा अनेक पर्यावरण शिक्षको को भी प्रशिक्षित किया है।

6. कल्पवृक्ष Kalpavriksh , पुणे

यह अशासकीय संगठन (NGO) आरम्भिक रूप से दिल्ली में स्थित था परनतु अब यह पुणें से कार्य कर रहा है तथा भारत के अनेक भागो में सकिय है। कल्पवृक्ष पर्यावरण सम्बन्धी अनेक आयामों पर कार्य कर रहा है। शिक्षा तथा जागरूकता, अनुसंधान तथा विवेचना, सीधी कार्यवाही तथा बहुमत बनाना, तथा विकास एवं पर्यावरण के मुद्दो पर अदालती कार्यवाही करना, यह सभी इसकी गतिविधियो में है। इसके कार्यो के अन्य क्षेत्र है– स्कूलो तथा महाविद्यालयों में वार्तायें तथा श्रव्य दृश्य (Audio Visual) कार्यकमो का आयोजन, प्रकृति भ्रमण तथा शिविरो का आयोजन, चलने वाले अभियानो में छात्रो की सहभागिता जैसे मार्गो पर प्रदर्शन, जैविक भोजन के सम्बन्ध में उपभोक्ताओ को जागरूक करना, विज्ञप्तियो का प्रकाशन,आदि कार्यकमो को चलाना तथा इसके लिये स्थानीय प्रशासन से सम्पर्क में रहना। विद्यालय शिक्षको के लिये पर्यावरणीय दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान विशेष के सम्बन्ध में कार्य विधान तैयार करने में भी यह सम्मिलित होता है। सन् 2003 में विकसित किये गये राष्ट्रीय जैव विविधता रणनिति तथा कार्य योजना (National Biodiversity Strategy and Action Plant 2003) भी इसी ने कराया था।

7. पर्यावरण शिक्षा एवं शोध– भारती विद्यापीठ संस्थान– Bharati Vidyapith Institute of Environmental Education and Research , पुणे

यह संस्थान भारती विद्यापीठ मानित विश्वविद्यालय (Deemed University) का ही एक भाग है। इस संस्थान में पर्यावरण विज्ञान के स्नातक, परास्नातक पाठ्यकमो के साथ ही शोध उपाधि (Ph.D.) कार्यकम भी संचालित होता है। यहां पर सेवारत शिक्षकों के लिये डिप्लोमा इन इन्वायरानमेंटल एडुकेशन (Diploma in Environmental Education) की भी सुविधा है। यह अनेक वाहयविस्तार (Extension-outreach) कार्यकम भी चलाता है जिसके अन्तर्गत 135 विद्यालयो में पन्द्रह दिवसीय पर्यावरण शिक्षा कार्यकम द्वारा शिक्षको को प्रशिक्षण देता है। इसने शोध कार्यो में जैव विविधता संरक्षण को केन्द्र में रखने की पहल की है। यह संस्था कम लागत पर उच्च स्थानीय महत्व के प्राकृतिक एवं स्थापत्य स्थलो, जिनका उच्च स्थानीय महत्व हो, के बारे में नवीनता परक (Innovative) पर्यावरणीय शिक्षा तथा व्याख्या केन्द्रो को विकसित करती है। इसने परिलक्षित समूहो (Target Groups) के लिये वहु–विषयक प्रकृति एवं पर्यावरण अध्ययन सामग्री तैयार की है। इसकी विशिष्टता हैं कि इस केन्द्र में प्राथमिक कक्षाओं से परास्नातक कक्षाओ तक के लिये पर्यावरण शिक्षा का संचालन होता है। इस केन्द्र नें पर्यावरण शिक्षा हेतु अनेक सहायक सामग्रियों को भी बनाया है। शिक्षकों के लिये स्कूल पाठ्यकम से सम्बन्धित त्वरित संदर्भ पुस्तकें (Hand book), यू0जी0सी0 के स्नातक कार्यकमो हेतु पाठ्यपुस्तक भी उपलब्ध करायी है। इसके निदेशक ने भारतीय जैव विविधता पर मापिन पब्लिशर्स, अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित एक CD-Rom भी बनायी है।

8. उत्तराखण्ड सेवा निधि– Uttrakhand seva nidhi (EKSN) , अल्मोड़ा

यह एक उपकेन्द्रीय एजेन्सी है जो आर्थिक आवश्यकताओं के लिये गैर सरकारी संगठनो पर निर्भर है। इसका प्रमुख कार्यकम विद्यालयी शिक्षको को प्रशिक्षित कर उनके द्वारा स्थानीय अथवा स्थान विशेष से सम्बन्धित पर्यावरणीय शिक्षा कार्य पुस्तिका कार्यकम (Environment Edecation Work book Programme) को संचालित करना है। इसका प्रमुख उद्देश्य संधारणीय (Sustainable) विधि से संसाधनों का उपयोग करने का शिक्षण एवं ज्ञान, स्कूल विद्यार्थियो के माध्यम से ग्रामीणों तक पहुँचाना है। इसके उक्त पर्यावरण शिक्षा कार्यकम से लगभग 500 विद्यालय जुड़े हुये है।

9. सालिम अली पक्षीं विज्ञान एवं प्राकृतिक इतिहास केन्द्र– Salim Ali centre for Ornithology and Natural History (SACON) , कोयम्बटूर

यद्यपि यह कार्य डा0 सालिम अली की एक प्रमुख कल्पना था, तथापि इसकी स्थापना उनकी मृत्यु के बाद ही हो सकी। वह चाहते थें कि स्थायी तौर पर समर्पित संक्षरक वैज्ञानिकों की आवश्यक सहायता की जाये। प्रारम्भ में यह संस्था बाम्बे नेचुरल हिस्टरी सोसाइटी की एक शाखा के रूप में विकसित हुयी परन्तु कालान्तर में इसने 1990 में एक स्वतन्त्र संस्था का रूप ले लिया। इसने ऐसे अनेक कार्यकम संचालित किये जिसके वास्तविक धरातल से संकटग्रस्त जैव विविधता के सम्बन्ध में अनेक महत्वपूर्ण सूचनायें प्राप्त हुयी।

10. भारतीय वन्यजीवन संस्थान – Wildlife Institute of India (WII) , देहरादून

इसकी स्थापना सन् 1982 में हुयी थी। इसका उद्देश्य वन अधिकारियों के प्रशिक्षण कार्यकम को स्थापित करना तथा वन्य जीवन प्रबन्धन (Wildlife Management) में नये शोध कार्य संचालित करना

है। इस संस्था का सबसे अधिक महत्वपूर्ण प्रकाशन है– रोजर्स तथा पनवर (Rodgers and Panwar) लिखित प्लैनिंग ए वाइल्डलाइफ प्रोटेक्टेड एरिया नेटवर्क फॉर इण्डिया (Planning a Wildlife Protected Area Network for India)(1988) अपने कार्यो से संस्था ने लम्बी समयावधि में भारत की जैविक समृद्धि पर प्रचुर मात्रा में सूचनायें उपलब्ध करायी है। इन संस्था ने वन विभाग के अधिकारियो एंव कर्मचारियों को बड़ी संख्या में प्रशिक्षित किया है जिससे वह कुशल वन्य जीवन प्रबन्धक बन सकें। इसकें द्वारा चलाये जाने वाला परास्नातक कार्यक्रम उत्तम कोटि के वन्यजीवन वैज्ञानिक बनाने में सफल रहा है।

इसका एक संभाग पर्यावरण पर होने वाले प्रभावों का आंकलन का ही कार्य करता है । कुल मिला कर यह संस्था पारिस्थितिकी – विकास, वन्य जीवन विज्ञान, आवस प्रबन्धन तथा प्रकृति व्याख्या में प्रशिक्षण देती है ।

सरकारी संगठन

1. भारतीय वानस्पतिक सर्वेक्षण,(Botanical survey of India-BSS)– कोलकता स्थित राजसी वनस्पति उद्यान (Royal Botanical Garden) परिसर में इस सर्वेक्षण संस्था की स्थापना सन 1890 में की गयी थी । इस संस्था के 49 वर्षो तक कार्य करने के उपरान्त उसे 1939 में बन्द कर दिया गया । भारत के स्वतन्त्र होने पर इसे पं0 जवाहर लाल नेहरू के समय 1954 में पुनः आरम्भ किया गया । सन् 1952 में आरम्भ हुयी प्रथम पंचवर्षीय योजना में बी0एस0आई0 की पहचान तथा इसके उद्देश्यों को तय करने की योजना सम्मिलित की गयी थी । इस प्रकार सन् 1955 में इस संस्था का मुख्यालय कोलकता तथा क्षेत्रीय उप मुख्यालय शिलांग, कोयम्बटूर, पूना तथा देहरादून में बन गये थे । इसका दूसरा विस्तार सन् 1962 से 1979 के बीच हुआ जिसमें इसके अन्य उप मुख्यालय इलाहाबाद, जोधपुर, पोर्ट ब्लेयर, इटानगर तथा गंगटोक में भी खोले गये । सन् 2003 तक वनस्पतिक सर्वेखण के कुल 9 क्षेत्रिय केन्द्र थे । यह भारतीय सीमा में उपलब्ध वानस्पतिक संस्थानों का सर्वेक्षण कर अपनी आख्यायें उपलब्ध कराता है ।
2. भारतीय जान्तविक सर्वेक्षण (Zoological Survey of India)– इसकी स्थापना वानस्पतिक सर्वेक्षण से 26 वर्ष प्श्चात् सन् 1916 में कोलकाता में हुयी थी । इसका उद्देश्य भारत में जन्तु मण्डल का वर्गीकरणात्मक अध्ययन अर्थात् सर्वेक्षण करना था । अपने गत कार्यकाल में इसमें जन्तुओं के नमूने जीव एकत्र किये है जो भारत के जन्तुओं के अध्ययन का आधार है । यदि किसी अध्ययन कर्ता को कोई जन्तु ऐसा मिलता है जिसकी प्रजाति सम्बन्धित उल्लेख में उपलब्ध वर्गीकरण तथा जन्तुमण्डल सम्बन्धी पुस्तकों में न हो, तो ऐसे जन्तुओं को जेड एस आई भेज कर उनकी प्रजाति के बारे में सूचना प्राप्त की जा सकती है कि यह पहले से ज्ञात अथवा भारत में पहली बार खोजा गया जन्तु है । इसी प्रकार वी0एस0आई0 से भी ज्ञात अथवा नवीन जाति के पादपों के बारे में सूचना पायी जा सकती है । जेड एस आई का आरम्भ सन् 1875 में कोलकत्ता स्थित भारतीय संग्रहालय में संग्रहीत जन्तुओं के सम्बद्ध किया गया था । एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल द्वारा सन् 1814 से 1875 तक तथा भारतीय संग्रहालय द्वारा 1875–1916 की बीच संग्रहीत सभी जन्तु अंततः 1916 में जान्तविक सर्वेक्षण के संग्रहालय को स्थानान्तरित कर दिये गये । अब यहां लगभग 10 लाख जन्तुओं का संग्रह है जो एशिआ में सबसे बड़ा संग्रह है । यह संस्था जन्तुओं के वर्गीकरणात्मक व्यवस्था तथा उनके परिस्थितिक तथ्यों का अध्ययन करती है । सम्प्रति इसके 16 क्षेत्रीय केन्द्र भी है।